VOL- XI | ISSUE- III | MARCH | 2024 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.02 | ISSN 2349-638x

हिंदुस्तानी संगीत में ख्याल गायकी के परिदृष्य में पटियाला घराना

डॉ आलोक शर्मा

यह घराना स्व. बड़े गुलामअली खॉ के कारण आज समस्त भारत में प्रसिद्ध है। जैसा कि विदित है पंजाब–प्रदेश में ख़्याल–गायकी का प्रचार प्रसार विभिन्न रियासतों में होता रहा है। पटियाला, नाभा, कपूरथला के अलावा अन्य रियासतों में भी ख़्याल–गायकी को पर्याप्त आश्रय मिला। सभी घरानों में शान और शौकत की दृष्टि से पटियाला सबसे प्रमुख रहा है। दिल्ली–दरबार के अधिकांश गायक इसी रियासत के आश्रय में आ गए थे।

जहां तक पटियाला की भौगोलिक स्थिति का सवाल है, पटियाला शहर भूतपूर्व पंजाब प्रान्त की एक रियासत थी जो आज पंजाब राज्य का एक प्रमुख जिला और शहर है यह जिले का प्रशासनिक मुख्यालय और ब्रिटिश इण्डिया के भूतपूर्व पंजाब प्रान्त की प्रमुख रियासत की राजधानी भी था जो सिंधु वंश के अन्तर्गत आता था।

१८५७ का वर्ष पूरे भारत वर्ष के लिए उथल–पुथल का रहा है और इसी के कारण राजधानी दिल्ली विद्रोह तथा अस्त–व्यस्तता की शिकार रही। अंतिम दिल्ली–सम्राट बहादुर शाह जफर, स्वयं असुरक्षित हो गए थे। इस स्थिति में दिल्ली के कलाकारों का जमघट पंजाब की ओर रवाना हुआ और उन्होंने विशेष रूप से पटियाला रियासत में पनाह ली। पटियाला में उस समय महाराजा नरेन्द्र सिंह का शासन था।

पटियाला–घराना वास्तव में दिल्ली का ही घराना रहा है। परन्तु पंजाब की स्थानीय शैलियों से प्रभावित होने के कारण 'पंजाब का घराना' बन गया और पटियाला रियासत में पनपने के कारण वह 'पटियाला–घराना' कहलाया। यह घराना अपनी तैयारी तथा खुबसूरती के कारण विश्व प्रसिद्ध हैं इस का कारण यहीं हो सकता हैं कि इस घराने मे दिल्ली, ग्वालियर, लखनऊ तथा जयपुर–घरानों की विशेषताओं को एक जगह समेटा गया है। इस घराने के मशहूर दो कलाकार, अलिया–फत्तू ने दिल्ली के तानरस खॉ के अतिरिक्त लखनऊ–घराने के बड़े अहमद खॉ तथा मुबारकअली, जयपुर के वहराम खॉ तथा ग्वालियर के हद्दू खॉ से भी तालीम प्राप्त की थी।

यही गायन परम्परा वर्तमान में शताब्दी के प्रसिद्ध कलाकार स्व. उस्ताद बड़े गुलामअली तथा अमानतअली 'नजाकतअली पं. जगदीश प्रसाद एवं पं. अजय चक्रवती तक चली आरही है। बड़े गुलामअली स्व. फतेहअली के वंशज थे। वे अलीबख्श के पुत्रा और आशिकअली के भतीजे थे। पटियाला घराने को यदि सारंगियों का घराना कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। इनके घराने में सारंगी–वादन पूर्वजों से चला आया था। स्वयं बड़े गुलाम अली भी शुरू में सारंगी–वादक ही रहे है और बाद में उत्कृष्ठ ख़्याल–गायक के रूप में उन्होंने अपना नाम रौशन किया। अमानतअली तथा नजाकतअली भारत के विभाजन तक पटियाला–दरबार के गायक रहे।

वे अपने–आपको शामचौरासी–घराने' का कहते है । जो वास्तव में पटियाला–घराने की उपशाखा है। आज पाकिस्तान चले जाने के बाद भी वे दोनों अपने–आपकों 'पटियालावाले' कहलाने में गौरव का अनुभव करते है।

राजा भूपेन्द्र सिंह जो नरेन्द्र सिंह के पिता थे इनके यहाँ दूर–दूर से कलाकार आकर अपनी कला का प्रदर्शन करते थे। इनमें से बहुत से कलाकार पटियाला रियासत में बस गये और पटियाला घराने के नाम से जाने जाने लगे।

पटियाला नरेश संगीत कलाकारों के अत्यन्त लोकप्रिय थे क्योंकि वे संगीत कलाकारों को खूब सहायता प्रदान किया करते थे। सभी शासक सिख धर्म के अनुयायी रहे है। जो गुरू ग्रन्थ साहिब की वाणी कीर्तन के रूप में गाते थे वे सभी वाणी रागों पर आधारित हुआ करती थी। महाराजा करण सिंह के संगीत के योगदान को आज भी खूब सराहा जाता हैं, जो रागियों (जो गुरूद्वारे में गाते हैं) को खेती के लिए जमीन और रहने के लिए मक़ान दे दिया करते थे।

इन्ही के समय से वेतन का रिवाज़ शुरू हुआ था, इसके पहले तनख्वा का कोई रिवाज़ नहीं था। उस समय के कलाकारों को सम्मान स्वरूप पुरूस्कारों से भी नवाज़ा जाता था।

पटियाला घराने की नींव उस्ताद मियां कालू खाँ ने डाली थी। यह एक विख्यात सारंगी वादक भी थे इनके पुत्रा उस्ताद नबी बक्श, उस्ताद अली बक्श और उस्ताद फतेह अली ने भी अपने पिता उस्ताद कालू खाँ से संगीत कि शिक्षा प्राप्त की थी।

टोंक रियासत के नवाब ने उस्ताद अली बक्श और फतह अली को करनेल और जरनेल की उपाधि से नवाजा था। उस्ताद काले खाँ कसूर वाले और उस्ताद अली बक्श कसूर वाले उस्ताद फतेह अली के शिष्य थे ।

उस्ताद अमानत अली खाँ उस्ताद फतेह अली खाँ ने भी इन्हीं से संगीत की तालिम ली थी। उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ के अतिरिक्त उस्ताद हमीद खाँ और उस्ताद अब्दूल रहमान खाँ के पोते उस्ताद मज़हर अली खाँ, जवाद अली खाँ इस घराने को आगे बढ़ा रहे है।

अली बक्श खाँ कसूर वाले और उनके पुत्रा उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ ख़्याल गाया करते थे। उनके पुत्रा मुनव्वर अली खाँ ने भी इसी परम्परा को आगे बढ़ाया । इन्हें ''तान सम्राट की उपाधि से नवाजा गया था। उस्ताद रजा अली जो उस्ताद मुनव्वर अली खाँ के पुत्रा है वे अपने दादा और पिता की परम्परा को आगे बढ़ा रहे है।

इस घराने की विशेषता तैयारी के साथ साथ मुलायमित भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इसी में गमक–अंग, तरानों की गायकी तथा अतिद्रुत लय में संचार करने वाली सपाट तानो से यह घराना अन्य घरानों से स्पष्ट रूप से अलग दिखाई देता हैं इस की ताने, अंग लय के अनुसार बॅटती है। तानों की बंदिशें तान के अनुसार अलग–अलग होती है। इस गायकी के निर्माण में पंजाब का टप्पा , सिक्ख शबद, सूफी बानी तथा कव्वाली का भी काफी प्रभाव देखा जा सकता है। यही प्रभाव यहां की ठुमरी और वाद्ययंत्रों के बाज पर भी पड़ा है। अलिया–फत्तू की रची हुई ठुमरियॉ अपनी कोमलता, रसीलेपन और टप्पेवाली तानों के लिए आज भी संगीत–संसार में प्रसिद्ध हैं स्व. बड़े गुलाम अली खॉ बरकत अली नजाकत सलामत अली एवं पं. जगदीश प्रसाद का ठुमरी–गायन इसी घराने का प्रतिनिधित्व करता रहा है।

बीसवीं शताब्दी में उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ ने इस घराने को बखूबी आगे बढाया । इनकी आवाज बहुत ही मधुर थी, तथा तीनों सप्तकों में सहजता से विचरण करती थी। खाँ साहिब पटियाला घराने के एक श्रेष्ठ कलाकार थे। एक संगीत समालोचक (चेतन करनानी) उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ के लिए यूं कहते है।

Ghulam Ali's "Bass note had matchless modulation and amplitude while the notes of the upper octave were free from shrillness If ever human voice resembles in its perfect repetition of sound of a well tuned instrument, it was Gulam Ali's". 1

1. Tradition of Hindustani Music By Manorma Sharma page 86

पटियाला घराने की विशेषताएं

पटियाला घराने की विशेषताएं जहाँ तैयारी के साथ जुडी है वहीं पटियाला घराने में पंजाबी ठुमरी गायकी का अपना एक अलग स्थान है जो बनारस अंग की ठुमरी से भिन्न है श्रृंगार रस की प्रधानता यद्यपि दोनों ही अंग की ठुमरियों को देखने से मिलता है परन्तु पंजाब अंग ठुमरी में छोटी–छोटी हरकतों खटके मुरकियों के अतिरिक्त बोलों के बीच–बीच में छोटी–छोटी सपाट तानों का भी प्रयोग किया जाता है, ठुमरी के बोलों में शेर'' आदि कहने की भी प्रथा है जो उर्दू शेर के अन्दाज से ही कही जाती है एवं इस घराने की यह एक प्रमुख विशेषता है ।

पटियाला घराने की एतिहासिक पृष्ठ भूमि

पटियाला घराना जसे खाँ से शुरू हुआ जो कालू खाँ के दादा थे । कालू खॉ ने ही ख़्याल गायन को प्रतिपादित किया था। इसीलिए पटियाला घराने की नींव डालने वाले उस्ताद कालू खाँ थे ।१

मियां कालू खाँ, उस्ताद बहराम खाँ जयपुर के शिष्य थे, उन्हें कुछ समय बाद उस्ताद मियां तानरस खाँ को सुनने का मौका मिला जो बहादुर शाह जफ़र के दरबारी गायक थे। २ इस प्रकार से कालू खाँ तानरस खाँ के शिष्य बन गये और करीब १० वर्ष तक ख़्याल गायन की शिक्षा लेते रहे। यही नहीं उस्ताद कालू खाँ ने ध्रुपद गायकी को छोड़ ख़्याल सीखा और अपने शिष्यों को भी ख़्याल गायन की शिक्षा देने लगे। इन्होंने अपने पुत्रा अली बख्श ओर शिष्य फतेह अली को संगीत में पारंगत किया और दोनो ही बड़े प्रसिद्ध हुए। उन्होंने अपने दुसरे पुत्रा नबी बक्स को भी गायन में पारंगत किया। नबी बक्श के दो पुत्रा थे उस्ताद मियां जान खाँ और अहमद जान खाँ। बडे पुत्र उस्ताद मियां जान खाँ के कोई औलाद नहीं थी लेकिन छोटे पुत्र मियां अहमद जान खाँ के दो पुत्र थे। इनमें से एक उस्ताद इलियास हुसैन खाँ पाकिस्तान में रह गये। इलियास खाँ के एक पुत्र था अनवर हुसैन खाँ। दोनों ने ही पटियाला घराने की गायकी को पाकिस्तान में प्रसिद्ध और अग्रसर किया। उस्ताद अली बक्श के एक पुत्रा था जिनका नाम अक्तर हुसैन था इनके तीन पुत्रा थे अमानत अली खाँ, फतेह अली खाँ, तथा हामिद अली खाँ , फतेह अली के एक पुत्रा था जिसका नाम आशिक अली था। आशिक अली खॉ की शादी नहीं होने से उसकी पीढ़ी आगे नहीं बढ़ सकी। फतेह अली खॉ के शिष्य अलीबख्श एवं काले खॉ ने पटियाला घराने की गायकी एवं सारंगी वादन की परम्परा की आगे बढाया। अलीबख्श के पुत्रा उस्ताद बडे गुलाम अली खॉ ने २० वी शताब्दी को अपने गायन से समृद्ध किया । इनका गाना श्रोताओं को अपने गायन से समृद्ध किया ।

इनका गाना श्रोताओं की हर वर्ग को अत्यंत भाता था क्यूं कि ये ख्याल गायन में जितने कुशल थे उतनी ही कुशलता से ठुमरी दादरा एवं पंजाब की लोक विधा को भी गाते थे। इनके भाई उस्ताद बरकत अली विख्यात ठुमरी गायक थे तथा पुत्रा मुनव्वर अली ने ख्याल और ठुमरी दोनो ही शैलियों में सिद्धी प्राप्त की थी। वर्तमान में इस घराने के अनेक कलाकार इस घराने को आगे बढा रहे है।

पटियाला घराने की शिक्षण पद्धति

पटियाला घराने की शिक्षण पद्धति के विषय में उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ साहब के पौत्रा व उस्ताद करामत अली खाँ साहब के पुत्रा मज़हर अली व जवाद अली खाँ (गायक) से जब मैने भेट की, व शिक्षण–पद्धति के विषय में पूछा तो वे बतलाते है कि हमारे यहाँ पर संगीत विद्यार्थी को स्वर साधना के साथ–साथ षड़ज का अभ्यास विशेषरूप से कराया जाता है । ३

Ref.
1 Tradition of Hindustani Music By Manorma Sharma page 81
2 Tradition of Hindustani Music By Manorma Sharma page 83
३ संगीत घराना अंक १९८२ पृष्ठ संख्या – २७

पटियाला घराने की गायकी की विशेषताएँ पटियाला घराने की गायकी जहाँ तैयारी पर आधारित है वही कोमलता पर भी उतना ही ध्यान दिया जाता है। अत: इस मकसद से स्वर साधना के बाद शुरू से ही कठिन स्वर समूहो अलंकारिक तानो, पल्टो का अभ्यास कराया जाना नितान्त आवश्यक है। उसके बाद विलम्बित व द्रुत लय की बंदिशो में मुखड़ा पकडने के विभिन्न अदाज भी इस घराने की ख़ासियत रही है। विलम्बित बंदिशो में स्वर–भराव के पश्चात् ''गमक'' का प्रयोग व द्रुत लय की बंदिशों में फिरत की तानो, व सपाट तानो का भी अभ्यास कराया जाना आवश्यक समझा जाता है। हमारे घराने में विलम्बित के तोडे मध्य व द्रुत से अलग ढाचें के होते है व तानों की बंदिशे तानो के अनुसार अलग–अलग होती है जिसके अभ्यास पर काफी बल दिया जाता है। पटियाला के अन्य वरिष्ठ गायक पण्डित जगदीश प्रसाद से किये गये साक्षात्कार में उन्होंने पटियाला घराने की शिक्षण पद्धति के बारे में बताया कि हमारे यहाँ विद्यार्थियों को (पंजाबी टप्पा) पंजाबी ठुमरी जो बारीक खटके मुरकियों व छोटी–छोटी तानो से सजी होती है। चूँकि पटियाला घराने की गायकी में छोटी–छोटी हरकतों तानो आदि का समय–समय पर अधिकांश प्रयोग होता है अत: इस घराने के विद्यार्थियों को तानो के लिए अधिक बल दिया जाता है साथ ही पंजाबी अंग की ठुमरी की सजावट में उन सभी बातों का ज्ञान कराया जाना आवश्यक समझा जाता है। २

१ इस घराने में सारंगी वादन पूर्वजों से चला आ रहा है। स्वयं कालू खां एक उत्कृष्ट सारंगी वादक थे तथा स्वयं उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ भी शुरू में सारंगी वादन ही करते थे। बाद में एक उत्कृष्ट गायकी में अपना नाम विश्वविख्यात किया।

२. यह घराना अपनी तैयारी के लिए प्रसिद्व है। इसमें हर रंग की गायकी विद्यमान है। इसका प्रमुख कारण यही हो सकता है कि इस घरानें में दिल्ली ग्वालियर जयपुर घरानों की विशेषताओं को एक जगह समेटा गया है।

३. इस घराने के प्रसिद्ध कलाकार अलिया फत्तू ने दिल्ली के उस्ताद तानरस खाँ के अतिरिक्त लखनऊ घराने के बडे अहमद खाँ व मुबारक अली खाँ व जयपुर घराने के बहराम खाँ तथा ग्वालियर के हद्दु खाँ साहब से तालीम ली थी।

४. इस घराने की विशेष तैयारी के साथ कोमलता भी है। गायकी के सभी अंग और तरानों की गायकी तथा अतिद्रुत लय में संचार करने वाली सपाट तानो से यह घराना अन्य घरानो से स्पष्ट रूप से अलग दिखायी देता है।

५. यहाँ पर तानें लय के अनुसार बंटती हैं और तानों की बंदिशे भी तालों के अनुसार ही अलग–अलग होती है।

६. पंजाब घराने की गायकी पर टप्पा, सिक्ख शब्द, सूफी वाणी तथा कव्वाली का काफ़ी प्रभाव देखा जा सकता है और यही प्रभाव यहाँ की ठुमरी और वाद्य यंत्रों के बाज पर भी पडा है। अलिया फत्तू द्वारा रचित ठुमरियां अपनी कोमलता रसीले पक्ष और टप्पे वाली तानों के लिए आज भी संगीत संसार में अपनी अलग पैठ जमाये हुए है। इस घराने में ख़्याल की कलापूर्ण बंदिशे अलंकारिक वक्र व फिरत की तानों का प्रयोग गायकी में विशेष रूप से किया जाता है।

यद्यपि उस्ताद नज़ाकत व सलामत अली खाँ भारत विभाजन तक पटियाला दरबार के गायक रहे पर अपने आपको ये शाम चौरासी'' घराने का घोषित करते है जो वास्तव में पटियाला घराने की ही उपशाखा है अत: दिल्ली व पटियाला घराने का पुराना सम्बन्ध रहा है। यही अंग दोनो घराने की गायकी में स्पष्ट देखने को मिलता है । ३ पटियाला घराना वास्तव में दिल्ली का ही घराना रहा परन्तु पंजाब की स्थानीय शैलीयों से प्रभावित होने के कारण पंजाब घराना बना और

पटियाला रियासत में पनपने के कारण वही पटियाला घराना कहलाने लगा।

संदर्भ

१ भेंट वार्ता पं. जगदीश प्रसाद दिनांक ०७ सितम्बर, २००८
२ Tradition of Hindustani Music by Manorama Sharma Page- 88

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com